KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF LAW, FINANCE & INDUSTRIAL RELATIONS
A REFEREED BLIND PEER REVIEW BI-ANNUAL JOURNAL
KIJLFIR/JUL-DEC 2018/ VOL-5/ ISS-2/A5 PAGE N0.20-24
ISSN: 2349 2589 **WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG**

समुदाय में टीकाकरण के प्रति जागरूकता

[1]RONAK PRAJAPAT
[1]Medical Social Worker, Pacific Medical College and Hospital, Udaipur

[2]DURGA SHANKER DANGI
[2]Health Educator, Pacific Medical College and Hospital, Udaipur

[3]ASHISH PRAJAPAT
[3]Public Health Manager, UPHC, Aayad Udaipur

Received August 5th, 2018; Revised August 25th, 2018; Accepted September 29th, 2018

सारांश

हमारे देश में राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम के अंतर्गत 15 वर्ष तक की आयु के बच्चों तथा तथा गर्भवती महिलाओं को घातक रोगों की विरूद्ध टीके दिए जाते हैंद्य ये रोग हैं, तपेदिक (टी.बी) डिप्थीरिया, परटूसिस (काली खाँसी), टिटनेस, खसरा (मीजल्स) तथा पोलियो (पोलियोमाइटिस) अगर किसी बच्चे को सही समय पर इन सभी रोगों से रक्षा करने वाली वैक्सीन्स की पर्याप्त खुराकें देकर रोग प्रतिरक्षित कर दिया जाता है तो भविष्य में वह इन घातक/अपंग करने वाली बीमारियों से काफी हद तक बचा रहेगा बाद में ऐसे बच्चे को टिटनेस टॉक्साइड वैक्सीन के अतिरिक्त अन्य वैक्सीन्स की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। टीकाकरण कार्यक्रम कारगर साबित हुए हैं। हालांकि इन टीकाकरण कार्यक्रमों का लाभ कई उन बच्चों को नहीं मिल पा रहा है जो उच्च जोखिम वाली बीमारियों की गिरप्त में होते हैं। इन टीकाकरण कार्यक्रमों से वंचित रहने वालों में उन बच्चों की संख्या ज्यादा है जो विकासशील देशों के होते हैं। तमाम अध्ययनों से इस बात का खुलासा हुआ है कि नियमित टीकाकरण कार्यक्रमों के दायरे से बाहर रहने वाले वे बच्चे होते हैं जिनके माता–पिता अथवा अभिभावक या तो इन मुहिमों से अनभिज्ञ होते हैं या टीकाकरण को लेकर उनके मन में कोई आशंका या भय व्याप्त होता है। जागरूकता अभियान के माध्यम से इन कार्यक्रमों को रेखांकित करना होगा ताकि उनको प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके। साथ ही माता–पिता अथवा अभिभावकों के मन से टीकाकरण कार्यक्रमों को लेकर व्याप्त किसी प्रकार की आशंका या डर को समाप्त किया जा सके।

1. प्रस्तावना

हमारे देश में राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम के अंतर्गत 15 वर्ष तक की आयु के बच्चों तथा तथा गर्भवती महिलाओं को घातक रोगों की विरूद्ध टीके दिए जाते हैंद्य ये रोग हैं, तपेदिक (टी.बी) डिप्थीरिया, परटूसिस (काली खाँसी), टिटनेस, खसरा (मीजल्स) तथा पोलियो (पोलियोमाइटिस) अगर किसी बच्चे को

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

सही समय पर इन सभी रोगों से रक्षा करने वाली वैक्सीन्स की पर्याप्त खुराकें देकर रोग प्रतिरक्षित कर दिया जाता है तो भविष्य में वह इन घातक/अपंग करने वाली बीमारियों से काफी हद तक बचा रहेगा बाद में ऐसे बच्चे को टिटनेस टॉक्साइड वैक्सीन के अतिरिक्त अन्य वैक्सीन्स की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। टीकाकरण कार्यक्रम कारगर साबित हुए हैं। हालांकि इन टीकाकरण कार्यक्रमों का लाभ कई उन बच्चों को नहीं मिल पा रहा है जो उच्च जोखिम वाली बीमारियों की गिरप्त में होते हैं। इन टीकाकरण कार्यक्रमों से वंचित रहने वालों में उन बच्चों की संख्या ज्यादा है जो विकासशील देशों के होते हैं। तमाम अध्ययनों से इस बात का खुलासा हुआ है कि नियमित टीकाकरण कार्यक्रमों के दायरे से बाहर रहने वाले वे बच्चे होते हैं जिनके माता–पिता अथवा अभिभावक या तो इन मुहिमों से अनभिज्ञ होते हैं या टीकाकरण को लेकर उनके मन में कोई आशंका या भय व्याप्त होता है। जागरूकता अभियान के माध्यम से इन कार्यक्रमों को रेखांकित करना होगा ताकि उनको प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके। साथ ही माता–पिता अथवा अभिभावकों के मन से टीकाकरण कार्यक्रमों को लेकर व्याप्त किसी प्रकार की आशंका या डर को समाप्त किया जा सके।

2. टीकाकरण का कार्य

हमारे शरीर में संक्रमणों से बचने के लिए प्राकृतिक सुरक्षा होती है। इसे प्रतिरक्षण क्षमता (इम्युनिटी) कहा जाता है। जब हमें कोई संक्रमण होता है, तो इससे लड़ने के लिए हमारा शरीर रसायनों का उत्पादन करता है, जिन्हें एंटीबॉडीज कहा जाता है।

संक्रमण के ठीक होने के बाद भी ये एंटीबॉडीज हमारे शरीर में ही रहते हैं। ये हमें संक्रमण पैदा करने वाले उस जीव के प्रति प्रतिरक्षित बना देते हैं। यह प्रतिरक्षण क्षमता थोड़े समय के लिए या फिर जिंदगी भर भी हमारे साथ बनी रह सकती है।

टीकाकरण के जरिये हमारे शरीर का सामना संक्रमण से कराया जाता है, ताकि शरीर उसके प्रति प्रतिरक्षण क्षमता विकसित कर सके। कुछ टीके मौखिक रूप से दिए जाते हैं, वहीं कुछ अन्य इंजेक्शन के जरिये दिए जाते हैं।

टीके का फायदा यह है कि संक्रमण के प्रति प्रतिरक्षित होने के लिए हमें पूरी तरह बीमार होने की जरुरत नहीं है। हल्का संक्रमण होने से भी टीकाकरण के जरिये हम उसके खिलाफ प्रतिरक्षित हो सकते हैं। इसी वजह से हम उस बीमार के होने से पहले ही उसके प्रति सुरक्षित हो जाते हैं।

3. शिशु के टीकाकरण की आवश्यकता

बचपन में टीकाकरण करवाने से शिशु अपनी जिंदगी की शुरुआत से ही संभवतया गंभीर बीमारियों से प्रतिरक्षित हो जाता है। शिशु को किसी बीमारी के खिलाफ टीका लगा हुआ है, तो उसे दोबारा वह बीमारी होने की संभावना काफी हद तक कम होती है। यह इसलिए क्योंकि आपके बच्चे ने उस बीमारी के खिलाफ एंटीबॉडीज का उत्पादन पहले ही कर लिया है। सभी समुदायों का सार्वजनिक टीकाकरण होने से माहमारी फैलने की संभावना काफी कम हो जाती है। इस तरह के कार्यक्रमों के जरिये ही बड़ी माता/चेचक (स्मॉलपॉक्स) और पोलियो जैसे रोग पूरी तरह समाप्त हो पाए हैं।

4. वर्तमान में किए गए शोध

यूनीसेफ की ताजा रिपोर्ट के अनुसार राज्य में पांच साल से कम उम्र के एक हजार बच्चों में से 83 बच्चे असमय की मौत के मुंह में चले जाते हैं। जीवित जन्म लेने वाले एक हजार बच्चों में से 62 नवजात भी इसी तरह जिंदा नहीं रह पाते। बच्चों की इन असमय मौतों का एक प्रमुख कारण गर्भवती माताओं और नवजात शिशुओं को समय समय पर जरूरी टीकों का न लगवाया जाना है। ये टीके बच्चों को ऐसी गंभीर बीमारियों से बचाने का काम करते हैं जो या तो जानलेवा साबित होती हैं या फिर आगे चलकर बच्चों में गंभीर शारीरिक विकृतियां पैदा कर देती हैं।

वर्ष 2012–13 का राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एएचएस) कहता है कि मध्यप्रदेश में केवल 66.4

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

प्रतिशत बच्चों का ही संपूर्ण टीकाकरण हो पाया था। सवा सात करोड़ की आबादी वाले देश के इस दूसरे सबसे बड़े राज्य में प्रतिवर्ष 18.9 लाख बच्चों और करीब 20 लाख गर्भवती माताओं के टीकाकरण का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है। लेकिन यह लक्ष्य पूरा नहीं हो पाता।

राज्य के शहरी और ग्रामीण इलाकों में भी टीकाकरण की दर में भारी अंतर है। शहरी क्षेत्रों में जहां टीकाकरण की दर 73.8 प्रतिशत है वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में यह 63.5 प्रतिशत है। प्रदेश में कुल 3.6 प्रतिशत बच्चे ऐसे हैं जिन्हें किसी भी प्रकार का टीका नहीं लगा।

5. विशेषज्ञों की राय

विशेषज्ञों के अनुसार बच्चों को लगने वाले टीके उन्हें सात जानलेवा बीमारियों से बचाते हैं। इनमें खसरा, टिटेनस, पोलियो, टीबी, गलघोंटू, काली खांसी और हेपेटाइटिस बी जैसी बीमारियां शामिल हैं। इनमें से पोलियो को छोड़कर बाकी टीके इंजेक्शन के जरिए दिए जाते हैं जबकि पोलियो की दवा बच्चों को बूंदों के रूप में पिलाई जाती है। बच्चों के अलावा गर्भवती महिलाओं को भी टिटेनस का टीका लगाकर खुद गर्भवती मां और उसके होने वाले बच्चें को टिटेनस जैसे घातक रोग से बचाया जा सकता है।

6. रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास

राजस्थान में यूनीसेफ की स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. वंदना भाटिया कहती हैं कि टीकाकरण बच्चों के स्वास्थ्य की बुनियाद है। बच्चों के स्वास्थ्य और भविष्य की मजबूती भी जीवनरक्षक टीकों पर निर्भर करती है। ये टीके न सिर्फ बच्चों को जानलेवा बीमारियों से बचाते हैं बल्कि उनकी रोग प्रतिरोधक शक्ति को भी बढ़ाते हैं।

7. मिशन इंद्रधनुष

आंशिक टीकाकरण या इससे पूरी तरह वंचित बच्चों को लाभ पहुंचाने के मकसद से 25 दिसंबर, 2014 को 'मिशन इंद्रधनुष' कार्यक्रम की शुरुआत की गई। 'मिशन इंद्रधनुष' एक राष्ट्रव्यापी पहल है और इसका विशेष ध्यान देश के 201 जिलों पर है। इन जिलों में आंशिक तौर पर टीकाकरण कराने वाले या उससे पूरी तरह वंचित तकरीबन 50 फीसदी बच्चे रहते हैं। मिशन इंद्रधनुष जानलेवा सात बीमारियों (डिप्थीरिया, काली खांसी, टेटनस, पोलियो, टीबी, खसरा और हेपेटाइटिस बी) के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करेगा। इसके अलावा, देश के चुनिंदा जिलों में जापानी इन्सेफेलाइटिस और हेमोफिलस इन्फ्लूएंजा ग्रुप बी के खिलाफ टीकाकरण अभियान चलाया जाएगा। टिटनेस से बचाने के लिए गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण भी कराया जाएगा।

वर्ष 2009–2013 के दौरान प्रतिरक्षण का दायरा 61 प्रतिशत से बढ़कर 65 प्रतिशत पर पहुंचा है। इससे संकेत मिलता है इसमें हर साल महज एक प्रतिशत की वृद्धि हो रही है। पांच प्रतिशत या उससे अधिक बच्चों को इसके दायरे में लाते हुए टीकाकरण के कार्यक्रम को और रफ्तार दिए जाने की जरूरत है। 2020 तक सभी बच्चों तक पहुंचने के लक्ष्य के साथ अभियान के तौर पर काम करना होगा। इसके पहले चरण को लागू करने के दौरान 201 जिलों पर विशेष ध्यान केंद्रित किए जाने की जरूरत है। इनमें 82 जिले उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान के हैं। आंशिक तौर पर टीकाकरण के दायरे में आने वाले या इससे पूरी तरह वंचित रहने वाले देश के 25 फीसदी बच्चें इन्हीं चार राज्यों के 82 जिलों में हैं। इसके अतिरिक्त दूसरे चरण में 297 जिलों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। प्रतिवर्ष लगभग 5 प्रतिशत बच्चों का पूर्ण टीकाकरण कर इस मिशन को तेजी से आगे बढ़ाना होगा। 2014 में 65 फीसदी बच्चों का टीकाकरण किया गया और अगले पांच साल वर्ष में इसे 90 फीसदी के स्तर पर पहुंचाना है। चार विशेष टीकाकरण अभियान 2015 के मार्च और जून के बीच चलाए जाएंगे तथा दो साल से कम उम्र के सभी बच्चों और गर्भवती महिलाओं को टेटनस टॉक्साइड के टीके लगाए जाएंगे। ये टीकाकरण अभियान लगातार चार महीनों तक चलाए

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

जाएंगे। हर महीने सात से 10 दिन तक यह कार्यक्रम चलेगा।

पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम से सीख लेते हुए सूक्ष्य योजनाएं बनानी होंगी ताकि यह अभियान सफल हो सके। इसके लिए प्रणालियों को मजबूत बनाना, वैक्सीन कोल्ड चेन का प्रबंधन, नियमित जांच–परख और योजनाओं की निगरानी करना होगी जिससे हर बच्चे तक पहुंचा जा सके। सरकार ने इसके लिए विभिन्न बाहरी एजेंसियों मसलन डब्ल्यूएचओ, यूनिसेफ और रोटरी से तकनीकी सहायता की मांग की है ताकि कार्यक्रम के उद्देश्य को हासिल किया जा सके।

जाहिर है कि टीकाकरण कार्यक्रम के कार्यान्वयन और टीकों का लाभ हर संभव लाभार्थी तक पहुंचने का कार्य सुनिश्चित करना एक चुनौतीपूर्ण काम है। मिशन इंद्रधनुष को सात रंगों से दर्शाया गया है। इसका मकसद सात बीमारियों डिप्थीरिया, काली खांसी, टिटनेस, पोलियो, टीबी, खसरा और हेपटाइटिस–बी के खिलाफ 2020 तक हर बच्चे को टीकाकरण के दायरे में लाना है चाहे वह आंशिक रूप से प्रतिरक्षण का लाभ लिया हो या उससे पूरी तरह वंचित रह गया हो। देश में टीकाकरण अभियान के प्रसार के लिए भारत सरकार ने इंद्रधनुष कार्यक्रम को शुरू किया है। पूर्ण टीकाकरण लाखों बच्चों को बीमारियों और उन्हें असमायिक मौत से बचाएगा। यह सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है।

8. पैसों की कमी

आमतौर पर जब भी चिकित्सा सुविधाओं की बात होती है तो यह तर्क दिया जाता है कि गरीब परिवार पैसों की कमी के कारण इलाज पर ध्यान नहीं देते लेकिन टीकों का मामला तो बिलकुल ही अलग है। ये सारी टीके सरकारी अस्पतालों में मुफ्त लगाए जाते हैं। इसका सीधा मतलब है कि जो बच्चे टीका लगने से वंचित रह जाते हैं उनके पीछे पैसों की कमी नहीं बल्कि जागरूकता की कमी या अभिभावकों की लापरवाही अधिक जिम्मेदार है।

9. गलत धारणाएं

इसके अलावा भी कुछ ऐसी गलत धारणाएं हैं जिनके चलते बच्चों को टीके नहीं लग पाते। मसलन बच्चे को बुखार आने या उसे खांसी जुकाम होने पर माता पिता टीका लगवाने नहीं ले जाते। चिकित्सा विशेषज्ञ कहते हैं कि खांसी–जुकाम, दस्त और कुपोषण जैसी स्थिति टीकाकरण में कोई बाधा नहीं बनती। यदि बच्चे को ये शिकायतें हैं तो भी उसे टीका लगवाया जा सकता है। उससे कोई नुकसान नहीं होता, हां लेकिन यदि टीका नहीं लगवाया जाता तो बच्चे के स्वास्थ्य को स्थायी नुकसान होने की आशंका कई गुना बढ़ जाती है और कभी कभी तो यह स्थिति जानलेवा भी साबित होती है। बच्चे देश का भविष्य कहे जाते हैं, जाहिर है इस भविष्य को सुरक्षित रखना है तो टीकाकरण जैसे अभियानों पर बहुत अधिक ध्यान देना होगा।

10. उपसंहार

चुनिंदा टीकाकरण कार्यक्रमों के जरिये उच्च जोखिम वाली बीमारियों की रोकथाम के लिए विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं, शिशुओं और बच्चों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। टीकाकरण कार्यक्रम में टीकों की संख्या अगल–अगल देश में भिन्न–भिन्न होती है। दुनिया के अधिकांश देशों में डिप्थीरिया, काली खांसी, टेटनस, पोलियो, खसरा और हेपेटाइटिस–बी जैसी बीमारियों के खिलाफ कुछ चयनित टीके लगाए जाते रहे हैं जो नियमित टीकाकरण कार्यक्रम के हिस्सा हैं।

11. संदर्भ :–

1. "Top Vaccination For Your Child". Vaxins. Retrieved 29 July 2016.
2. "Ten Great Public Health Achievements in the 20th Century". CDC
3. Hinman, A. R.; Orenstein, W. A.; Rodewald, L. (2004-05-15). "Financing Immunizations in the United States". Clinical Infectious Diseases. 38 (10): 1440–1446. doi:10.1086/420748. ISSN 1058-4838.

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

4. Cook, Joseph; Jeuland, Marc; Maskery, Brian; Lauria, Donald; Sur, Dipika; Clemens, John; Whittington, Dale (2009). "Using private demand studies to calculate socially optimal vaccine subsidies in developing countries". Journal of Policy Analysis and Management. 28 (1): 6–28. ISSN 0276-8739. PMID 19090047.

5. "Vaccine-Preventable Diseases, Immunizations, and MMWR --- 1961--2011". www.cdc.gov. Retrieved 2018-03-07.

KAAV

Copyright © 2018 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org